नानाजी ने दिखाई

चित्रकूट। ग्रामोदय मेला, चित्रकूट में अनुकरणीय आयोजन था। ग्रामीण भारतीयता, भारतीय संस्कृति, सदियों पुरानी परज़्परा, सामाजिक व्यवस्था, खेती की पुरातन पद्धति-नवीनतम् प्रयोग सहित सज़्पूर्ण भारत जैसे धरा पर एक जगह मौजूद था। स्वाधीनता के बाद जिस भारत की परिकल्पना की गई थी, यदि उस दिशा में काम हुआ होता तो ग्रामीण भारत कुछ इसी तरह का होता। अपनी बोली, अपना पहनावा, अपना खान-पान, अपना रहन-सहन लेकिन, संस्कृति सबकी एक जैसी। दीनदयाल शोध संस्थान द्वारा सुरेन्द्रपाल ग्रामोदय विद्यालय प्रांगण में 24 से 27 फरवरी तक लगाया गया ग्रामोदय मेला ग्रामवासियों को नई जानकारियों से तथा देश के योजनाकारों को ग्रामीणों की अपनी पहल और पुरुषार्थ से किए गए काम से परिचित कराने के उदेश्य से लगाया गया था। दीनदयाल शोध संस्थान का यह प्रयास काफी हद तक सार्थक भी रहा। मेले में लगी प्रदर्शनी के जरिए ग्रामीणजनों को कई महत्वपूर्ण जानकारियां हासिल हुई। दिल्ली से आए योजनाकारों को भी ग्रामीण जरुरत और उनकी कार्यपद्धति को जानने का